International Journal of Applied Research 2020; 6(3): 12-14

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(3): 12-14
www.allresearchjournal.com
Received: 14-01-2020
Accepted: 17-02-2020

सतीश कुमार पासवान
शोधार्थी, वाणिज्य, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

Correspondence Author:
सतीश कुमार पासवान
शोधार्थी, वाणिज्य, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

भारत में पुष्प व्यवसाय की वर्तमान स्थिति : एक अध्ययन

सतीश कुमार पासवान

सार
पुष्प व्यवसाय का संबंध फूलों की खेती से होती है। इसके अंतर्गत फूल और फूलदार पौधों की खेती, फूल के विभिन्न का उत्पादों व्यवसाय आता है। फूलों के बढ़ते कारोबार ने पुष्प उद्योग को नया आयाम दिया है। फूलों की खेती कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, असम, मणिपुर के एक बड़े हिस्से में की जाती है। फूल से माला, गजरा, सुगंधित तेल, इत्र, गुलाब जल आदि बनाये जाते है। भारत के पुष्प और पुष्प उत्पाद अपनी गुणवत्ता के कारण विदेशों में निर्यात किये जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, इंगलैण्ड, कनाडा, भारतीय पुष्पकृषि के प्रमुख आयातक देश रहे है, जिससे भारतीय राजस्व में लगातार वृद्धि हो रही है।

कूट शब्द : भारत, पुष्प व्यवसाय, खेती

भूमिका
वर्तमान अध्ययन में भारतीय पुष्प व्यवसाय की वर्तमान स्थिति को उद्घाटित किया जा रहा है। भारत ने वर्ष 2017–18 में विश्व के अनेकों देशों में करीब 28,485.21 मी० टन पुष्प कृषि उत्पाद का निर्यात किया, जिससे 556 करोड़ रूपये प्राप्त हुये। भारत में पुष्प की खेती एक लंबे अरसे से होती रही है, लेकिन आर्थिक रूप से लाभदायक एक व्यवसाय के रूप में पुष्पों का उप्पादन पिछले कुछ सालों से ही प्रारंभ हुआ है। समकालिक पुष्प जैसे गुलाब, कमल ग्लैडियोलस, रजनीगंधा, सुरजमुखी, जसमीन, कार्नेशन आदि के बढ़ते उत्पादन के कारण गुलदस्ते और उपहारों के स्वरूप देने में इनका उपयोग काफी बढ़ा है। पुष्प को मनुष्य के द्वारा सजावट और औषधि के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके अलावा घरों और कार्यालयों को सजाने में भी इनका उपयोग से होता है। मध्यम वर्ग के जीवनस्तर में सुधार और आर्थिक संपन्नता पुष्प बाज़ार के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और फूलों की खेती को एक विशाल बाज़ार का स्वरूप प्रदान है। भारत पुष्प उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है।

जीवन में खुशी के रंग भरना हो या फिर देवी–देवताओं को प्रसन्न करना हो या फिर किसी को श्रद्धांजलि अर्पित करना हो, इन सबमें इजहार का माध्यम बनता है फूल। वैसे भी आजकल फूलों को लेकर की गई सजावट को कोई जवाब नहीं है। ये बेजान पड़ी चीजों में एक नई जान डाल देते हैं। किसी भी पार्टी, कान्फ्रेंस या फिर मीटिंग में जाएं, वहां आज केटरिंग के बाद सबसे ज्यादा ध्यान फूलों की डेकोरेशन पर ही दिया जाता है। इन्हीं सब कारणों से फूलों के उत्पादन में खासा इजाफा देखने को मिल रहा है।

पुष्प व्यवसाय के अंतर्गत फूलों को झड़ने से कैसे बचाया जाए, फूलों को लंबे समय तक सुरक्षित कैसे रखा जाए, उसकी अच्छी क्वालिटी को कैसे अधिक से अधिक बढ़ाया जाए, बड़े आकार के फूल व अधिक से अधिक संख्या में फूल का उत्पादन कैसे किया जाए, फूलों की कटिंग कैसे की जाए, ताकि दूसरे फूल को हानि न पंहुचे, कौन से फूल का उत्पादन बीज के जरिए किया जाए और कौन से फूल का डंठल के जरिए, बेमौसम फूलों का उत्पादन कैसे किया जाए, एक्सपोर्ट के दौरान फूलों का संरक्षण कैसे किया जाए यानी फूलों से जुड़ी तमाम बातों की जानकारी प्राप्त कि जाती है।

पुष्प व्यवसाय एक ऐसा क्षेत्र है, जहां सरकारी व निजी क्षेत्र के अलावा स्वयं का व्यवसाय कर अच्छा–खासा मुनाफा अर्जित किया जा सकता है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि देश में प्रतिवर्ष 20 प्रतिशत के हिसाब से फूलों की खपत बढ़ रही है। एक सर्वे के अनुसार फूलों के कारोबार से लगभग पूरे देश में पांच लाख लोग आजीविका चला रहे हैं। पूरे देश में फूलों की मांग के हिसाब से आपूर्ति महज केवल 60 प्रतिशत ही हो पाती है। इस हिसाब से देखा जाए, तो एक्सपोर्ट के कारोबार में फूलों का एक अच्छा स्कोप है। नौकरी व व्यवसाय के अलावा रिसर्च एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र को भी अपनाया जा सकता है।

नर्सरी खोल कर स्वरोजगार करें तो अच्छी कमाई हो सकती है। भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रेदश, हरियाणा, तमिलनाडू, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख पुष्पकृषि केंद्र के रूप में उभरे है। फूल का व्यवसाय हॉर्टिकल्चर की एक शाखा है, जिसमें फूलों की पैदावार, मार्केटिंग, कॉस्मेटिक और परफ्यूम इंडस्ट्री के अलावा फार्मास्यूटिकल आदि शामिल हैं। इस व्यवसाय को शुरू करके अच्छी–खासी कमाई किया जा सकता है। फूलों की पैदावार के लिए सबसे उपयुक्त समय सितंबर से मार्च तक है, लेकिन अक्तूबर से फरवरी का समय इस व्यवसाय के लिए वरदान है। फूलों की लगभग सभी प्रजातियों की बुवाई सिंतबर–अक्तूबर में की जाती है। गुलाब और गेंदा हर प्रकार की मिट्टी में लगाए जा सकते हैं, परंतु दोमट, बलुआर या मटिआर भूमि ज्यादा उपयोगी है। गुलाब की खेती कलम लगा कर की जाती है। उन्नत किस्म के बीज पूसा इंस्टीटयूट या देश के किसी भी बड़े अनुसंधान केंद्र से प्राप्त किए जा सकते हैं। वैसे तो फूलों का कारोबार और पैदावार साल भर चलती है, पर जाड़ो में यह बढ़ जाती है। यह पाया गया है कि व्यापारिक पुष्पकृषि में अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र में ज्यादा पैदावार देने की क्षमता है इसलिए यह एक बेहतर व्यापार है। निर्यात के प्रयोजनों के लिए भारतीय पुष्पकृषि पारम्परिक पुष्पों की अपेक्षा खुले फूलों की ओर अग्रसर हुआ हैं।

भारत ने वर्ष 2017–18 के दौरान विश्वभर में 28,485.21 मीट्रिक टन पुष्पकृषि उत्पाद का निर्यात किया जिससे 555.90 करोड़ रूपए अर्जित किए। प्रमुख निर्यात लक्ष्य (2017–18) सयुंक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, यू के, कनाडा और जापान इसी अवधि के दौरान भारतीय फूलों की खेती (पुष्पकृषि) में प्रमुख आयातक देश रहे।

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), भारत में फुलों की खेती के विकास के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी है। पुष्पकृषि उत्पादों में मुख्यतया खुले पुष्प, पॉट प्लांट, कट फोइलेज, सीड्स बल्बस, कंद, रुटेड़ कटिंग्स और सुखे फूल व पत्तियां सम्मिलित है। प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पुष्पकृषि में खूले गुलाब के फूलों का व्यापार, लाली, गुलदाउदी, गारगेरा, ग्लेडियोलस, जाइसोफिला, लायस्ट्रिस, नेरिन, आर्किड, अर्किलिया, अन्थुरियम, ट्यूलिप और लिलि है। गारग्रेरास, गुलनार आदि फूलों की खेती ग्रीन हाउस (हरित गृह) में की जाती है। खुल खेतों में उगाई जाने वाली फसल गुलदाउदी, गुलाब, गेल्लारड़िया, लिलि, मेरीगोल्ड, तारा, कंदाकार प्रमुख है।

फूलों में रैनन क्लाउज, स्वीट, विलियम, डेहलिया, लुपिन, वेरबना, कासमांस आदि के फूल लगा सकते हैं। इसके अलावा गुलाब की प्रजातियों में चाइना मैन, मेट्रोकोनिया फर्स्ट प्राइज, आइसबर्ग और ओक्लाहोमा जैसी नई विविधताएं हैं, जो शर्तिया कमाई देती हैं। इसके साथ–साथ मोगरा, रात की रानी, मोतिया, जूही आदि झाडियों के अलावा साइप्रस चाइना जैसे छोटे–छोटे पेड़ लगा कर अच्छी कमाई की जा सकती है।

अवसर

निम्नलिखित कारणों से पुष्प व्यवसाय क्षेत्र में विशाल अवसर हैं:

- कम पूंजी की आवश्यकता।
- सरकार द्वारा विस्तृत संवर्धन और समर्थन।
- लघु उद्योग क्षेत्र द्वारा विशिष्ट निर्माण के लिए आरक्षण।
- परियोजना प्रोफाइल।
- धन–वित्त और सब्सिडी।
- मशीनरी प्राप्ति।
- कच्चे माल की प्राप्ति।
- मानव–शक्ति प्रशिक्षण।
- तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल।
- औजार तथा परीक्षण सहयोग।
- सरकार द्वारा विशिष्ट क्रय के लिए आरक्षण।
- निर्यात संवर्धन।

भारत में पुष्प व्यवसाय की वर्तमान स्थिति

भारत में फूल की खेती लम्बें अरसे से कि जाती रही है, लेकिन आर्थिक रूप से लाभदायक एक व्यवसाय के रूप में पुष्पों का उत्पादन पिछले कुछ वर्षों से ही शुरू हुआ है। अनुकूल जलवायु, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के साथ सस्ता मजदुरी के परिणाम स्वरूप फूल उत्पादन भारत में जड़ जमाता जा रहा है। भारत सरकार ने इस उद्योग को ''सनराइज सेक्टर'' के रूप में चिन्हित किया जो 100 प्रतिशत निर्यात के लिए उपयुक्त है। फूलों की निरंतर बढ़ती मांग के परिणाम स्वरूप पुष्प व्यवसाय कृषि की महती वाणिज्यिक ट्रेड के रूप में प्रभाव में आ सका है। इसके परिणाम स्वरूप भारत में व्यवसायिक पुष्पकृषि एक हाई–टेक क्रियाकलाप के रूप में उभरा है। भारत में पुष्प उत्पादन को तेजी से विकसित उद्योग के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय व्यवसायिक पुष्प की खेती निर्यात के दृष्टिकोण से महत्तवपूर्ण बनता जा रहा है। औद्योगिक उदारीकरण एवं व्यापार नीति ने पुष्पों के निर्यात के नये मार्ग खोलें हैं। व्यवसायिक पुष्पोत्पाद सशक्त मुनेफे, तथा किफायती कृषि व्यवसाय के रूप में भारत में प्रभाव में आया। भारत में फूलों की खेती का उद्योग परम्परागत तरीकों से अलग निर्यात की ओर अग्रसर हो सका है। परंपरागत फूल की खेती खुले खेतों में कि जाती थी, जिसमें फूलों का जीवन अल्प होता था, परिणाम स्वरूप उनके निर्यात में कठीनाईयों का सामना करना पड़ता था। आर्थिक उदार नीति ने उधमियों को पुष्पों के निर्यात करने हेतु नूतन मार्ग प्रस्तुत किया। विश्व स्तर पर भारत में लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन विकास कर रही है, और फूलों की प्रति व्यक्ति खपत का सह संबंध इस से संबंधित है। जिसके परिणाम स्वरूप फूलों के उत्पादन का विकास और विस्तार तेजी से संभव हो सका। एशिया में भारत, चीन तथा थाइलैंड पुष्प उत्पादन बड़े पैमाने पर करते हैं। बीते दो दशकों में भारतीय फूल अंतर्राष्ट्रीय बाजार में काफी मात्रा में आ रहे हैं। भारत में पुष्प का उत्पादन तेजी से हो रहा है। अंतराष्ट्रीय पुष्प व्यवसाय जो वर्तमान में ₹ + 17 विलियन है और 10–15 प्रतिशत प्रतिवर्ष के दर से बढ़ रहा है, संभव है वर्ष 2025 तक विश्व में पुष्प व्यवस्थायें ₹ + 25 विलियन तक पहुँच जाय।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और निजीकरण के परिणाम स्वरूप भारतीय पुष्प उद्योग में व्यापक परिवर्तन आया, और अनेकों व्यवसायी का इस व्यवसाय में आगमन हुआ, परिणाम स्वरूप फूलों का निर्यात तेजी से बढ़ा। भारत में फूलों के उत्पादन और खपत में तेजी से विकास और विस्तार हुआ। वर्तमान में (2017–18) भारत में 2,86,000 हे० भूमि पुष्प की खेती हेतु उपयोग में लाया गया, जो 2007–08 में 880000 मि० टन था जो बढ़कर 2029000 मि० टन (2016–17) हो गया है। जबकि कट पुष्प का उत्पादन जो 2006–2007 में 3717.5 मि० का था, बढ़कर 9873.2 मि० 2016–17 में हो गया है। भारत में पुष्प का घरेलु उत्पाद 8–10 प्रतिशत की वार्षिक दर के साथ बढ़ रहा है। सम्पूर्ण विश्व में भारतीय पुष्प का व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा है। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, पं० बंगाल, महाराष्ट्र एवं गुजरात पुष्प उत्पादन में देश में अग्रणी राज्य है। ये राज्य दो तिहाई से ज्यादा पुष्प का उत्पादन करते हैं। इन पुष्पों में मेरिगोल्ड, जसमिन, गुलाब, महत्त्वपूर्ण हैं। भारत में पुष्प उत्पादन व्यवसाय, पुष्प के गुणवत्ता के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हैं। निर्यात के दृष्टिकोण से भारत से प्रतिवर्ष 38.14 हजार टन पुष्प, जिसका मुल्य 543.46 करोड़ (2016–17) किया जाता है। अमेरिका, नीदरलैण्ड, जर्मनी, जापान, इंगलैण्ड, इथोपिया बड़े पैमाना पर भारत से पुष्प का आयात करते हैं। भारतीय पुष्प उत्पाद उद्योग

अपनी उच्च स्तरीय गुणवत्ता हेतु पुरे विश्व मे जानी जाती है। भारतीय पुष्प उद्योग के विकाश और पुष्पों के निर्यात की असीम संभावना है।

विपणन

भारतीय फूल बाजार अत्यंत असंगठीत है। देश के अधिकांश शहरों में फूलों की बिक्री थोक बाजार में खुले आसमान के बीच होता है। यही से फूल खुदरा विक्रेता तक पहुँचता है। सड़क के किनारे से इसे खरीदा और बेचा जाता है। हलाँकि महानगरों में फूलों के कई शोरूम हैं, जहाँ इसे उचित तापमान पर रखा जाता है। सरकार इस दिशा में प्रभावशाली कदम उठा रही है और इसके विकाश हेतु फूलों की दुकान हेतु निवेश को तैयार है, जहाँ बड़े पैमाना पर पुष्प का भंडारण किया जा सके और इसे सुरक्षित रखा जा सके। भारत के फूलों को बेचने हेतु किया गया पैकेजिंग एवं परिवहन व्यवस्था अत्यंत अव्यवहारिक है। इसे बाँस की टोकरी पोलिथीन, कागज के कार्टून, पुराने समाचार पत्र में पैक करके, रोड, रेल और हवाई मार्ग से बाजार में लाया जाता है। सरकारी प्रयास के कारण कुछ शीत यान, तथा विशेष शीत चैम्बर का व्यवस्था हो सका है, जिससे निर्यात के क्रम में फूलों की ताजगी बने रहे, परंतु यह अभी भी अपर्याप्त है।

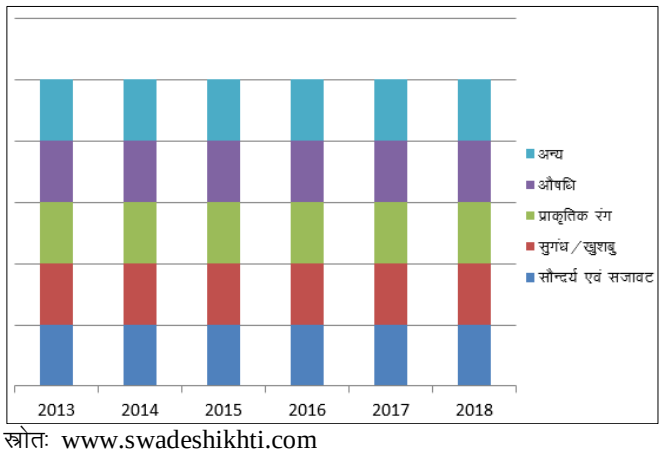

स्त्रोतः www.swadeshikhti.com

आकृति 1: भारतीय फूल का बाजार

पुष्प व्यवसाय वर्तमान समय में लाभदायक कृषि व्यवसाय के रूप में प्रभाव में आया है। पुष्प कृषि भारत में एक पुरातन कृषि कार्य है, जो लघु एवं सीमांत कृषकों के हेतु स्वरोजगार मार्ग प्रसस्त करता है, जिससे आर्थिक फायदा हो सके। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से देशी एवं विदेशी बाजारों में फूलों को भेजे जाते है। फूलों के सफल विपणन हेतु विकसित बाजार तथा सुव्यवस्थित बाजार तथा विपणन प्रणाली का होना आवश्यक है। फूलों के विपणन के अंतर्गत निम्न पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

1. विपणन के चैनल
2. लागत, मार्जिन एवं मूल्य विस्तार
3. उपभोक्ताओं के लाभ में उत्पादकों की हिस्सेदारी

गुलाब : गुलाब के विपणज में तीन चैनलों पर ध्यान दिया जात है।

चैनल I: उत्पादक – एजेंट – खुदरा बिक्रेता – उपभोक्ता

चैनल II: उत्पादक – खुदरा बिक्रेता – उपभोक्ता

चैनल III: उत्पादक – स्थानीय बाजार

भारत में दिल्ली फूलों का बड़ा बाजार है यहाँ 65 प्रतिशत फूलों कि बिक्री चैनल I से अंतर्गत कि जाती है, बचे हुये 32 प्रतिशत तथा 3 प्रतिशत फूलों को चैनल II तथा चैनल प्प के द्वारा किया जाता है।

सारांश

भारत में फूल व्यवसाय वर्ष 2018 तक 158 विलियन का रहा है, संभव है, फूल का बाजार वर्ष 1924 तक 473 विलियन तक का हो जाय। फूल भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा रहा है, जिसकी सौंदर्य, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावसायिक रहा है। आधुनिक काल में महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक कारोबार के रूप में सामने आया है। भारत के विभिन्न राज्यों में फूल की खेती होती है। कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम में बड़े पैमाने पर फूलों की खेती कि जाती है। इन फूलों से गजरा, माला, तेल, इत्र एवं औषधि बनाई जाती है, जिसे देशी और विदेशी बाजार में बेचे जाते हैं। नीदरलैण्ड, जर्मनी, अमेरिका इत्यादी देशों में पुष्प एंव पुष्प उत्पाद बड़े पैमाने पर निर्यात किये जाते हैं, जो आर्थिक विकाश के साधन बनते जा रहे हैं।

भारत में पुष्प व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा है। सौंदर्य एवं सजावट के उद्देश्यों से इतर, फूलों भी भारी मात्रा सुगंध, खुशबु, रंग, औषधि बनाने के कार्य में आता है।

संदर्भः

1. तिवारी, ए०, (2011) पुष्पोत्पादनः विकास की असीम संभावनाएं योजनाः 40, अंक – 1 अप्रैल
2. बनर्जी, एस, पी (2008) फूल फसलों की खेती और प्रबंधन, हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय प्रेस, पालयपुर, पृष्ठ सं० – 324–328
3. राय, पी०, के, (2012) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृ० सं० 217–218
4. सेन गुप्ता एण्ड कमल (2009) फ्लोरी कल्चर मार्केटिंग इन इंण्डिया, एक्सेल बुक्स, नई दिल्ली पृष्ठ सं० 141–146
5. पुरोहित हरीश (1998), फ्लोरीकल्चर इन इंडियन कल्वर, सुमेघा पब्लिकेशन, रायपुर पृष्ठ सं०– 120–127
6. जिन्दल, एस, के – (2010) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृ० सं० 219–230
7. राजा, एस. के (1974) पुष्पवाटिका एक अध्ययन, अंकित प्रिंटिग प्रेस, बंगलौर
8. www.apeda.gov.in
9. इंडियन हॉर्टिकल्चर डेटावेस (2014), नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड, मिनिस्टरी ऑफ एग्रिकल्चर, गॉवरमेंट ऑफ इंडिया
10. www.floriculture.in